डॉ० कविता कुमारी सिंह

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

स्नातक पार्ट – 03

विषय – अलंकार के भेद

वक्रोक्ति अलंकार – जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

वक्रोक्ति अलंकार के दो भेद हैं :—

(1) काकु वक्रोक्ति अलंकार.
(2) श्लेष वक्रोक्ति अलंकार

काकु वक्रोक्ति अलंकार – जब वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का उसकी कंठ ध्वनि के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकाले, वहाँ पर काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है। जैसे – मैं सुकुमारी नाथ बन जोगू।

(2) श्लेष वक्रोक्ति –

जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाय, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है। जैसे – "को तुम हो इत आये कहाँ घनश्याम हो तो कितहूँ बरसो। चितचोर कहावत है हम तो तहाँ जाहुं जहाँ धन सरसो।"

अपह्नुति अलंकार – अपह्नुति का अर्थ है छिपाव। जब किसी सत्य बात या वस्तु को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी वस्तु की स्थापना की जाती है वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है। जैसे –

"सुनहु नाथ रघुवीर कृपाला,
बन्धु न होय मोर यह काला।

विभावना — जहाँ पर कारण के न होते हुए भी कार्य का हुआ जाना पाया, वहाँ पर विभावना अलंकार होता है। जैसे —

"बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।

विशेषोक्ति — काव्य में जहाँ कार्य सिद्धि के समस्त कारणों के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो वहाँ पर विशेषोक्ति अलंकार होता है। जैसे — 'नेह न नैनन को कछु,
उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नित-प्रति रहें,
तऊ न प्यास बुझाई॥

भ्रांतिमान — जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो, वहाँ पर भ्रांतिमान अलंकार होता है। अर्थात उपमान और उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का भ्रम हो जाय, अर्थात एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाय, वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है। जैसे —

पाँय महावर देन को नाइन बैठी आय।
फिरि-फिरि जानि महावरी, एड़ी मलति जाय॥"

विरोधाभास — जब किसी वस्तु का वर्णन करने पर विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। जैसे —

"आग है जिसमें जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के।
शून्य है जिसमें बिछे हैं पांवड़े पलकें।

असंगति — जहाँ विरोध दृष्टिगत होते हुए कार्य और कारण का वैयधिकरण्य रणित हो, वहाँ पर असंगति अलंकार होता है। जैसे — "हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै।"

काव्यलिंग अलंकार — जहाँ पर किसी उक्ति से समर्थित की गई बात को काव्यलिंग अलंकार कहते हैं। अर्थात जहाँ पर किसी बात के समर्थन में कोई न कोई उक्ति या कारण जरूर दिया जाय वहाँ काव्यलिंग अलंकार होता है —

जैसे — कनक-कनक ते सौगुनी,
मादकता अधिकाय।
उहि खाय बौरात नर,
एहि पाए बौराय॥"

संदेह अलंकार — जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनी रहती है तब संदेह अलंकार होता है।

जैसे — "यह काया है या शेष उसी की छाया,
क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया॥"

अतिशयोक्ति — जब किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करने में लोक समाज की सीमा या मर्यादा टूट जाय वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। अर्थात किसी वस्तु का बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया जाय, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। जैसे: —

'हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग,
~~सगरी लंका जल गई~~
सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भाग।